International Journal of Humanities, Social Sciences and Literary Research
Website: www.ijhslr.org/
E-mail: editorinchief@ijhslr.org

हिंदी साहित्य की राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रीय संकल्प: विकसित भारत @2047 के निर्माण में भूमिका

श्वेता सिंह[1], अंशु सत्यार्थी[2]

[1,2] हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, फरीदपुर (बरेली),

संबद्धता: एम.जे.पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय (MJPRU), बरेली

**Corresponding author email: shwetasing0077@gmail.com*

Received:17 August 2025, Revised: 26 October 2025, Accepted: 13 December 2025, Available Online: 15 December, 2025

1.प्रस्तावना

"साहित्य संगीत कला विहीनः, साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।" यह पुरानी उक्ति यह सिद्ध करती है कि साहित्य ही मनुष्य को पशुत्व से ऊपर उठाकर मनुष्यता के धरातल पर प्रतिष्ठित करता है। "विकसित भारत @2047" का महान लक्ष्य 150 करोड़ भारतीयों के सामूहिक संकल्प और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आह्वान करता है। यह केवल सरकारी घोषणापत्रों या आर्थिक नीतियों की भरमार नहीं है। स्वाधीनता के 100वें वर्ष में भारत को विकसित देश के रूप में देखना सिर्फ सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में वृद्धि या औद्योगिक विकास नहीं है। वास्तव में इसका अर्थ है एक ऐसे समाज की स्थापना जो नैतिक रूप से सशक्त, सांस्कृतिक रूप से सम्मानित और बौद्धिक रूप से स्वतंत्र हो।

भारतीय जनमानस की चेतना को जगाने और उसे राष्ट्रीय लक्ष्यों के प्रति समर्पित करने का काम हिंदी साहित्य ने शुरू से आज तक किया है। विज्ञान और तकनीक (जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नवाचार) भौतिक सुख-सुविधाओं का निर्माण करते हैं, लेकिन साहित्य मानवीय संवेदनाओं को बचाता है, जो एक "समावेशी समाज" (Inclusive Society) बनाने के लिए आवश्यक हैं। हिंदी साहित्य हमारे प्राचीन 'भारतीय ज्ञान परंपरा' (IKS) के माध्यम से भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है, जब दुनिया सस्टेनेबिलिटी (Sustainability) और ग्लोबल लीडरशिप (Global Leadership) जैसे विषयों पर गहन विचार कर रही है। इस शोध पत्र का उद्देश्य है कि इसी ऐतिहासिक और वैचारिक पृष्ठभूमि में मुंशी प्रेमचंद की यथार्थवादी संवेदना और जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' का संतुलित मानवतावाद किस प्रकार विकसित भारत के निर्माण में वैचारिक स्रोत

बन सकें। इस अध्ययन का मूल उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि भारत की विकास यात्रा पूरी होगी जब वह वैश्विक पटल पर एक "विश्वगुरु" के रूप में अपनी साहित्यिक धरोहर और भाषाई अस्मिता को बचाएगा।

1. ऐतिहासिक स्मृति और देशभक्ति

ऐतिहासिक मूल्यों और सांस्कृतिक अस्मिता पर किसी भी देश का विकास निर्भर करता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से देश को जगाया। विकासशील भारत की राह पर आज भी राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध पंक्तियाँ हमें दिखाती हैं:

> "जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,

> वह नर नहीं, पशु निरा है और मृतक समान है।"

एक विकसित देश बनने के लिए पहली शर्त नागरिकों में 'आत्मगौरव' का भाव होना चाहिए। साहित्य हमें बताता है कि अपनी भाषा, विरासत और संस्कृति को जानने के बिना हम वैश्विक नेतृत्व की ओर नहीं बढ़ सकते।

2. सर्वव्यापी विकास: समेकित विकास का साहित्यिक दृष्टिकोण

'Pathways to Inclusive Growth' को सेमिनार के मूल उद्देश्यों में सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में देखा गया है। हिंदी साहित्य समावेशी विकास को 'वैचारिक और संवेदनागत समानता' के रूप में देखता है, जबकि आर्थिक परिभाषा में इसका अर्थ प्रगति का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचना है।

- स्त्री नेतृत्व और विमर्श का उदय: विकसित भारत @2047 में महिलाओं की भूमिका दोहरी है: एक लाभार्थी और एक 'नेतृत्वकर्ता'। जब महादेवी वर्मा ने अपनी रचनाओं में स्त्रियों की पीड़ा और शक्ति का वर्णन किया, तो उन्होंने एक 'समावेशी समाज' की कल्पना की, जहाँ स्त्रियों को बराबर की जगह मिलती है।

महादेवी वर्मा की कल्पना और आज की वास्तविकता

महादेवी वर्मा ने अपनी रचनाओं (जैसे "श्रृंखला की कड़ियाँ") में स्त्रियों की अनंत पीड़ा और अदम्य शक्ति का चित्रण करने का उद्देश्य केवल सहानुभूति पैदा करना नहीं था, बल्कि वे एक ऐसे "समावेशी समाज" की स्थापना करना चाहती थीं, जहाँ महिलाओं को पूरक नहीं, बल्कि स्वतंत्र इकाइयों के रूप में देखा जाए।

* पीड़ा से शक्ति: आज, महादेवी जी ने जिस 'शक्ति' की बात की, वह संसद से लेकर अंतरिक्ष (ISRO) और स्टार्टअप इकोसिस्टम में देखी जा सकती है।

* समानता का अधिकार: वर्तमान में, उनके द्वारा कल्पित "बराबर की जगह" का मतलब केवल कानूनी अधिकार नहीं, बल्कि निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी है।

* मानव समाज और सामाजिक न्याय: 'अंतिम व्यक्ति' (Antyodaya) का उदय समावेशी विकास का मूल लक्ष्य है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रसिद्ध कविता में इस असमान और पूँजीवादी विकास पर कड़ा प्रहार किया गया है:

* "अबे, सुन बे गुलाब, पाई खुशबू, रंग-ओ-आब, खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट!"

समावेशी विकास और गोदान

मुंशी प्रेमचंद का प्रसिद्ध उपन्यास "गोदान" भारतीय समाज की उन विसंगतियों का उल्लेख करता है, जिन्हें दूर किए बिना हम एक "विकसित भारत" की कल्पना नहीं कर सकते।

* कृषक जीवन: 'गोदान' का नायक होरी जीवन भर संघर्ष करता है। 2047 के विकसित भारत का लक्ष्य है कि भविष्य का किसान होरी की तरह लाचार न हो।

* धनिया का संघर्ष: धनिया का चरित्र बताता है कि भारतीय ग्रामीण स्त्रियाँ जन्म से ही न्यायप्रिय और जुझारू होती हैं। धनिया जैसे पात्रों को आत्मनिर्भर बनाना ही वास्तविक सामाजिक विकास है।

4. भविष्य का मानव और 'कामायनी'

जयशंकर प्रसाद की "कामायनी" हृदय और तकनीक का संतुलन सिखाने वाली एक "मार्गदर्शिका" की तरह है।

* बुद्धि बनाम हृदय (इड़ा और श्रद्धा): कामायनी में "इड़ा" तकनीक और बुद्धिवाद का प्रतीक है। प्रसाद जी चेतावनी देते हैं कि यदि हम सिर्फ "इड़ा" (मशीन) के पीछे भागेंगे, तो प्रलय होगा। विकसित भारत के लिए हमें संवेदना या "श्रद्धा" के साथ चलना होगा।

* कार्य और परिणाम का संतुलन: मनु का संघर्ष बताता है कि बिना नैतिक मूल्यों के कर्म विनाशकारी है। यही "निष्काम कर्म" की प्रेरणा भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) से मिलती है।

* योग्यता का संदेश: "शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त, विकल बिखरे हैं, निरुपाय, समन्वय उनका करे समस्त, विजयीनी मानवता हो जाए।"

5. भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और वर्तमान समय

विकासशील भारत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' है।

* सुशासन और नैतिक मूल्य: तुलसीदास की रामराज्य की कल्पना वास्तव में आज के 'कल्याणकारी राज्य' का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

* सस्टेनेबिलिटी और प्रकृति: छायावादी कवियों ने प्रकृति के साथ जो अटूट रिश्ता दिखाया, वही आज की 'ग्रीन अर्थव्यवस्था' का लक्ष्य है।

* युवा शक्ति की अपील: रामधारी सिंह 'दिनकर' की पंक्तियाँ युवाओं को आत्मविश्वास देती हैं: "मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं, अंधेरे का अजेय सूर्य हूँ मैं।"

निष्कर्ष

'विकसित भारत @2047' का विचार एक सांस्कृतिक अभियान भी है। विज्ञान अगर प्रगति में गति देता है, तो साहित्य दिशा देता है। आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ सुदृढ़ चारित्रिक और नैतिक आधार होने पर ही राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया पूरी होगी। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' और मुंशी प्रेमचंद की 'गोदान' हमें आदर्श और यथार्थ का संतुलन सिखाते हैं। 2047 में भारत को स्थायी प्रगति प्राप्त करने के लिए अपनी साहित्यिक चेतना और तकनीकी प्रगति का सुंदर समन्वय करना होगा। मशीनीकरण के इस युग में, साहित्य मानवता को जीवित रखेगा और भारत को वैश्विक पटल पर एक सुसंस्कृत 'विश्वगुरु' के रूप में स्थापित करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

हिंदी साहित्यिक कृतियाँ (प्राथमिक स्रोत):

1. गुप्त, म. (1912). भारत-भारती. चिरगाँव: साहित्य सदन।
2. तुलसीदास, गो. (2004). श्रीरामचरितमानस. गोरखपुर: गीता प्रेस।
3. दिनकर, रा. सि. (1952). रश्मिरथी. पटना: उदयाचल।
4. निराला, सू. त्रि. (1942). कुकुरमुत्ता. इलाहाबाद: भारती भंडार।
5. प्रसाद, ज. (1936). कामायनी. वाराणसी: भारती भंडार।
6. प्रेमचंद, मु. (1936). गोदान. बनारस: सरस्वती प्रेस।
7. वर्मा, म. (1942). श्रृंखला की कड़ियाँ. इलाहाबाद: भारती भंडार।
8. सरकारी रिपोर्ट एवं वैचारिक स्रोत:

9. नीति आयोग. (2023). विकसित भारत @2047: युवाओं की आवाज़. भारत सरकार।
10. भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) विभाग. (2022). भारतीय ज्ञान परंपरा के आधारभूत स्तंभ. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
11. सिंह, ना. (1982). दूसरी परंपरा की खोज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
12. शर्मा, रा. (1954). निराला की साहित्य साधना. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।